बाइबल पर आधारित निर्णय लेना

अध्ययन निर्देशिका

अध्याय छः

परिस्थिति-संबंधी दृष्टिकोण : हमारे लक्ष्य को प्राप्त करना

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

For videos, manuscripts, and other resources, visit Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

विषय-वस्तु

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका 4

नोट्स 5

I. परिचय (0:30) 5

II. राज्य की परिस्थितियां (3:37) 5

A. राज्य का महत्व (4:24) 5

1. धन्य-वचन (6:48) 5

2. प्रभु की प्रार्थना (10:01) 6

3. भौतिक आवश्यकताएं (12:15) 7

B. राज्य के घटक (13:57) 7

1. राजा (14:12) 7

2. लोग (17:49) 8

3. वाचाएं (23:39) 9

C. राज्य का विकास (26:52) 10

1. आरंभिक शांति (28:01) 10

2. विद्रोह (31:06) 11

3. अंतिम शांति (33:06) 11

III. राज्य में जीवन (35:44) 12

A. परमेश्वर को महिमा देना (37:12) 12

1. परमेश्वर की महिमा (37:36) 12

2. परमेश्वर को महिमा देना (41:01) 13

B. परमेश्वर का आनन्द उठाना (45:55) 13

1. मानवजाति की भूमिका (46:58) 14

2. व्यवस्था की भूमिका (49:24) 14

IV. राज्य का कार्यक्रम (54:18) 15

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

A. सांस्कृतिक आदेश (55:18) 16
1. परिभाषा (55:47) 16
2. सृष्टि की विधियां (58:23).....16
3. प्रयोग (1:03:35).....18

B. महान् आज्ञा (1:11:42) 20
1. परिभाषा (1:11:56).....20
2. आशय (1:14:28) 20
3. सांस्कृतिक आदेश (1:16:04) 21

V. उपसंहार (1:23:47) 23

पुनर्समीक्षा के प्रश्न 24

उपयोग के प्रश्न 29

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका

इस अध्ययन निर्देशिका को इसके साथ जुड़े वीडियो अध्याय के साथ इस्तेमाल करने के लिए तैयार किया गया है। यदि आपके पास वीडियो नहीं है तो भी यह अध्याय के ऑडियो और/या लेख रूप के साथ कार्य करेगा। इसके साथ-साथ अध्याय और अध्ययन निर्देशिका की रचना सामूहिक अध्ययन में इस्तेमाल किए जाने के लिए की गई है, परन्तु यदि जरुरत हो तो उनका इस्तेमाल व्यक्तिगत अध्ययन के लिए भी किया जा सकता है।

- **इससे पहले कि आप वीडियो देखें**
    - **तैयारी करें** — किसी भी बताए गए पाठन को पूरा करें।
    - **देखने की समय-सारणी बनाएं** — अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय को ऐसे भागों में विभाजित किया गया है जो वीडियो के अनुसार हैं। कोष्ठक में दिए गए समय कोड्स का इस्तेमाल करते हुए निर्धारित करें कि आपको देखने के सत्र को कहाँ शुरू करना है और कहाँ समाप्त। IIIM अध्याय अधिकाधिक रूप में जानकारी से भरे हुए हैं, इसलिए आपको समय-सारणी में अंतराल की आवश्यकता भी होगी। मुख्य विभाजनों पर अंतराल रखे जाने चाहिए।
- **जब आप अध्याय को देख रहे हों**
    - **नोट्स लिखें** — सम्पूर्ण जानकारी में आपके मार्गदर्शन के लिए अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय की आधारभूत रूपरेखा रहती है, इसमें हर भाग के आरंभ के समय कोड्स और मुख्य बातें भी रहती हैं। अधिकांश मुख्य विचार पहले ही बता दिए गए हैं, परन्तु इनमें अपने नोट्स अवश्य जोड़ें। आपको इसमें सहायक विवरणों को भी जोड़ना चाहिए जो आपको मुख्य विचारों को याद रखने, उनका वर्णन करने और बचाव करने में सहायता करेंगे।
    - **टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखें —** जब आप वीडियो को देखते हैं तो जो आप सीख रहे हैं उसके बारे में आपके पास टिप्पणियां और/या प्रश्न होंगे। अपनी टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखने के लिए इस रिक्त स्थान का प्रयोग करें ताकि आप देखने के सत्र के बाद समूह के साथ इन्हें बाँट सकें।
    - **अध्याय के कुछ हिस्सों को रोकें/पुनः चलाएँ** — अतिरिक्त नोट्स को लिखने, मुश्किल भावों की पुनः समीक्षा के लिए या रुचि की बातों की चर्चा करने के लिए वीडियो के कुछ हिस्सों को रोकना और पुनः चलाना सहायक होगा।
- **वीडियो को देखने के बाद**
    - पुनर्समीक्षा के प्रश्नों को पूरा करें — पुनर्समीक्षा के प्रश्न अध्याय की मूलभूत विषय-वस्तु पर निर्भर होते हैं। आप दिए गए स्थान पर पुनर्समीक्षा के प्रश्नों का उत्तर दें। ये प्रश्न सामूहिक रूप में नहीं बल्कि व्यक्तिगत रूप में पूरे किए जाने चाहिए।
    - उपयोग प्रश्नों के उत्तर दें या उन पर चर्चा करें — उपयोग के प्रश्न अध्याय की विषय-वस्तु को मसीही जीवन, धर्मविज्ञान, और सेवकाई से जोड़ने वाले प्रश्न हैं। उपयोग के प्रश्न लिखित सत्रीय कार्यों के रूप में या सामूहिक चर्चा के रूप में उचित हैं। लिखित सत्रीय कार्यों के लिए यह उचित होगा कि उत्तर एक पृष्ठ से अधिक लम्बे न हों।

© 2013 by Third Millennium Ministries
www.thirdmill.org

नोट्स

I. परिचय (0:30)

इस अध्याय में हम परमेश्वर के राज्य की सफलता और विजय पर ध्यान देंगे जब यह स्वर्ग से पूरी पृथ्वी को घेरने के लिए फैलता है।

II. राज्य की परिस्थितियां (3:37)

A. राज्य का महत्व (4:24)

परमेश्वर मसीह में उसके राज्य की स्थापना एवं विजय में सबसे अधिक महिमा को प्राप्त करता है।

1. धन्य-वचन (6:48)

मसीही नैतिक शिक्षा — वह धर्मविज्ञान जिसे निर्धारित करने के उन साधनों के रूप में देखा जाता है कि कौनसे मनुष्य, कार्य और स्वभाव परमेश्वर की आशीषों को प्राप्त करते हैं और कौनसे नहीं।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

यीशु ने विशेष रूप से परमेश्वर के राज्य की आशीषों को ऐसे पुरस्कार या लक्ष्य के समान सामने रखा जो उसके श्रोताओं को नैतिक रूप से जीने में प्रोत्साहित करे।

2. प्रभु की प्रार्थना (10:01)

- हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है

- तेरा नाम पवित्र माना जाए

- तेरा राज्य आए

- तेरी इच्छा पूरी हो

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. भौतिक आवश्यकताएं (12:15)

जीवन के सारे लक्ष्यों में से हमारा पहला और प्रमुख लक्ष्य पृथ्वी पर उसके राज्य की विजय के द्वारा परमेश्वर की महिमा होना चाहिए।

B. राज्य के घटक (13:57)

1. राजा (14:12)

राजाओं से अपेक्षा की जाती थी कि वे :

- अपने लोगों की रक्षा करें उनकी जरूरतें पूरी करें
- उनसे दया के साथ व्यवहार करें
- अपने लोगों की भलाई के लिए बुद्धिमानी से शासन करें

परमेश्वर को प्रायः सारी सृष्टि पर सुज़रेन, या सर्वोच्च सम्राट के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

परमेश्वर एक विशेष रूप में पुराने नियम में इस्राएल का और नए नियम में कलीसिया का राजा था।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. लोग (17:49)

वे लोग जिन्हें परमेश्वर ने अपने लिए बुलाया है :

- पुराना नियम — सामान्यतः अब्राहम और उसके वंश
- नया नियम — सामान्यतः कलीसिया

जब परमेश्वर ने संसार की सृष्टि की तो उसने मानवजाति को उसके वासल राजाओं के रूप में स्थापित किया।

यह जिम्मेदारी मानवजाति की थी कि :

- सारे संसार को लोगों से भर दे
- संसार को वैसे बना दे जैसे परमेश्वर ने अदन की वाटिका को बनाया था

आरंभ से ही परमेश्वर का राज्य अपने केन्द्र और नियति में वैश्विक था :

- परमेश्वर ने सारी मानवजाति पर प्रत्यक्ष रूप से शासन किया
- उसकी इच्छा थी कि सारा संसार उसका राज्य बन जाए

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

परमेश्वर ने अपने केन्द्र को राष्ट्रीय स्तर तक रखा, जिसमें उसने विशेष राज्य के रूप में अब्राहम के वंश पर ध्यान को केन्द्रित किया।

यीशु के राजत्व में परमेश्वर के राज्य कलीसिया पर केन्द्रित था।

3. वाचाएं (23:39)

परमेश्वर ने वाचाओं के माध्यम से अपने राज्य का संचालन किया जिन्होंने यह व्यक्त किया :

- अपने लोगों के प्रति परमेश्वर के सद्भाव
- परमेश्वर के प्रति लोगों की जिम्मेदारियां
- आज्ञाकारिता के लिए आशीषों और अनाज्ञाकारिता के लिए श्रापों के परिणाम

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

परमेश्वर और उसके लोगों के बीच छः मुख्य वाचाएँ :

- आदम
- नूह
- अब्राहम
- मूसा
- दाऊद
- मसीह

C. राज्य का विकास (26:52)

ऐतिहासिक चरण :

- सृष्टि = आरंभिक शांति
- पतन = विद्रोह
- छुटकारा = अंतिम शांति

1. आरंभिक शांति (28:01)

आदम और हव्वा आज्ञाकारी सेवक थे। और फलस्वरूप, परमेश्वर और मनुष्यजाति के बीच शांति या मेल था।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

वाचा के सभी घटक मानवजाति के पक्ष में उचित रूप से कार्य करते थे।

2. विद्रोह (31:06)

मानवजाति ने अपनी एक वाचायी जिम्मेदारी का उल्लंघन किया। और फलस्वरूप, उन्होंने वाचायी श्रापों को ग्रहण किया।

पश्चाताप के द्वारा परमेश्वर की ओर मुड़ने और वाचायी जिम्मेदारियों का पालन करने की अपेक्षा हम निरंतर विद्रोह करते रहे एवं वाचायी श्रापों को पाते रहे।

3. अंतिम शांति (33:06)

परमेश्वर मानवजाति के पाप में गिरने के तुरन्त बाद से ही अपने राज्य में शांति की पुनर्स्थापना करने लगा।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

"पहला सुसमाचार"— परमेश्वर ने पाप के श्राप से मानवजाति को बचाने के लिए एक छुटकारा देने वाले को भेजने का प्रस्ताव दिया।

III. राज्य में जीवन (35:44)

वेस्टमिनस्टर लघु प्रश्नोत्तरी 1 :
प्रश्न : मनुष्य का मुख्य लक्ष्य क्या है?
उत्तर : मनुष्य का मुख्य लक्ष्य परमेश्वर को महिमा देना और सदैव उसका आनन्द लेना है।

A. परमेश्वर को महिमा देना (37:12)

1. परमेश्वर की महिमा (37:36)

नैतिक शिक्षा के लक्ष्य के रूप में परमेश्वर की महिमा :

- वह प्रतिष्ठा जो परमेश्वर अपने सामर्थी कार्यों के द्वारा प्राप्त करता है

- परमेश्वर को सम्मान और उसकी प्रशंसा

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. परमेश्वर को महिमा देना (41:01)

मनुष्यों की यह जिम्मेदारी है कि वे परमेश्वर को महिमा दें क्योंकि वह हमारा राजा है।

मनुष्यजाति का उद्देश्य :

- उसके वासल राजाओं के रूप में पृथ्वी पर अधिकार करना
- सारे संसार में उसके राज्य के शासन और उसकी आशीषों को फैला देना

जब हम मनुष्यजाति के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करते हैं, तो :

- परमेश्वर का महत्व, नाम और प्रतिष्ठा बढ़ जाते हैं
- इस प्रकार उसकी महिमा भी बढ़ जाती है

B. परमेश्वर का आनन्द उठाना (45:55)

एक सही मानवीय आनन्द परमेश्वर को महिमा देता है।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

1. मानवजाति की भूमिका (46:58)

परमेश्वर के आदर्श राज्य में हरेक :

- प्रभु से प्रेम करता है
- उसके और उसके लोगों के साथ संगति करता है

2. व्यवस्था की भूमिका (49:24)

व्यवस्था की एक भूमिका हमें ऐसे जीवन जीने में निर्देशित करना है जो आशीष और आनन्द की ओर अगुवाई करता है।

यदि हम व्यवस्था का गलत इस्तेमाल करते हैं तो इसके भयानक परिणाम हो सकते हैं।

परमेश्वर की व्यवस्था का उचित उपयोग मानवजाति के लिए बड़ी आशीष है।

- प्रसन्नता
- अनुग्रहकारी वरदान
- वाचायी आशीषें

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

जब हम परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करते हैं, तो हम उसका आनन्द उठाते हैं क्योंकि और क्योंकि :

- वह हमारी आज्ञाकारिता को आशीषित करता है
- यह हमें खुशी देता है कि हम उस परमेश्वर को प्रसन्न करें जो हमसे प्रेम करता है

जब हम परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करते हैं, तो उसकी महिमा करते हैं :

- उसके उद्देश्य को पूरा करने के द्वारा
- उसके महत्व को मानने के द्वारा
- आभार व्यक्त करने के द्वारा

IV. राज्य का कार्यक्रम (54:18)

हर युग में परमेश्वर ने अपने लोगों को यह बताने के लिए सटीक लक्ष्य दिए हैं कि सारे संसार में उसके राज्य को कैसे स्थापित करे।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

A. सांस्कृतिक आदेश (55:18)

1. परिभाषा (55:47)

सांस्कृतिक आदेश — परमेश्वर की आज्ञा कि मनुष्यजाति को मानवीय संस्कृति के विकास के माध्यम से परमेश्वर के राज्य को पृथ्वी की छोर तक फैलाना है।

2. सृष्टि की विधियां (58:23)

परमेश्वर द्वारा अपनी आज्ञाएं प्रकट करने के रूप =

- मौखिक — शब्दों के द्वारा
- प्राकृतिक —हमारे चारों ओर के संसार के द्वारा
- सृष्टि की विधियां — वह आज्ञा जो परमेश्वर के सृष्टि के पहले कार्यों के द्वारा प्रकट हुई, जब उसने आकाश और पृथ्वी की रचना की।

विवाह : उस उद्देश्य पर आधारित है जिसके लिए परमेश्वर ने दो रूपों, स्त्री और पुरूष, में रचना की।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

सृष्टि में परमेश्वर के उद्देश्य :

- परमेश्वर के चरित्र की अभिव्यक्तियां हैं
- सारे मनुष्यों के लिए निर्देशात्मक हैं

विवाह प्रत्यक्ष रूप से पृथ्वी को भरने, फलने-फूलने और बढ़ने के सांस्कृतिक आदेश से संबंध रखता है।

परिश्रम : आदम को परमेश्वर की वाटिका में परिश्रम करने के लिए रचा गया था। हव्वा को उसकी सहायता करने के लिए रचा गया था।

परिश्रम प्रत्यक्ष रूप से पृथ्वी पर अधिकार करने, अर्थात् सारे संसार में मानवीय समाजों को स्थापित करने, के सांस्कृतिक आदेश की आज्ञा से संबंध रखता है।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. प्रयोग (1:03:35)

आरंभिक शांति — सांस्कृतिक आदेश सृजनात्मक आदेश था

- विवाह के माध्यम से अधिक लोगों की रचना
- परिश्रम के माध्यम से व्यवस्थित समाजों की रचना

विद्रोह — यह भ्रष्टाचार और श्राप विशेषकर विवाह और परिश्रम पर लागू हुआ।

सांस्कृतिक आदेश अभी भी हम पर जिम्मेदारी डालता है :

- विवाह करने और संतान उत्पन्न करने की
- परिश्रम करके पृथ्वी की छोर तक परमेश्वर के राज्य को फ़ैलाने की

सांस्कृतिक आदेश का अब एक विस्तृत प्रयोग है :

- पृथ्वी पर अधिकार करके उसे परमेश्वर के विश्वासयोग्य लोगों से भरना
- हमारी संस्कृतियों से पाप को हटाने के द्वारा पतित मानवीय समाज को पुनर्स्थापित करना और छुड़ाना

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

विवाह और परिश्रम दोनों में छुटकारे की विशेषताएं हैं :

- विवाह और संतानोत्पत्ति ने अंत में संसार के उद्धारकर्त्ता को जन्म दिया।
- परिश्रम ने मानवजाति को छुड़ाने वाले को उत्पन्न करने तक बनाए रखा।.

नूह

- पृथ्वी को भरो
- संसार को बनाए रखो

अब्राहम

- अनगिनत संतान
- सारी पृथ्वी पर अधिकार

यीशु

- संसार और मानवजाति को सिद्ध बनाएगा।
- कलीसिया के साथ विवाह रचाएगा

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

B. महान् आज्ञा (1:11:42)

1. परिभाषा (1:11:56)

महान् आज्ञा :

- मसीह द्वारा ग्यारह विश्वासयोग्य प्रेरितों को अपने प्रतिनिधित्वों के रूप में नियुक्त करना
- सारे संसार में परमेश्वर के राज्य को फैलाने के लिए उन्हें दी गई आज्ञा

तीन मूलभूत तत्व :

- यीशु का कथन कि अधिकार उसके पास है
- प्रेरितों को यीशु द्वारा दिया गया आदेश
- यीशु का आश्वासन कि वह प्रेरितों को सामर्थ देगा और उनकी सुरक्षा करेगा

2. आशय (1:14:28)

कलीसिया की जिम्मेदारी राज्य के उस कार्यक्रम को जारी रखना है जो प्रेरितों ने आरंभ किया था।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

कलीसिया का कार्य :

- संसार के सब लोगों को सुसमाचार सुनाए
- विश्वासियों और उनके परिवारों को कलीसिया में लाए
- उनको बपतिस्मा दे
- उन्हें वह सब करना सिखाए जिसकी आज्ञा यीशु ने दी है

3. सांस्कृतिक आदेश (1:16:04)

सांस्कृतिक आदेश एवं महान् आज्ञा के बीच संबंध के पहलु :

- **समानताएं**
  - परमेश्वर के राज्य का निर्माण करना
  - पृथ्वी को भरना
  - पृथ्वी पर अधिकार करना

महान् आज्ञा सांस्कृतिक आदेश को मसीह द्वारा लागू करना है जब तक उसका पुनरागमन नहीं होता।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

- **भिन्नताएं**

  सांस्कृतिक आदेश : हर युग के लिए

  महान् आज्ञा : कलीसिया के लिए

  सांस्कृतिक आदेश : मूलभूत जिम्मेदारी

  महान् आज्ञा : प्राथमिक प्रयोग

  सांस्कृतिक आदेश : विशाल आज्ञा

  महान् आज्ञा : संकीर्ण आज्ञा

- प्राथमिकताएं

  सांस्कृतिक आदेश, महान् आज्ञा से अधिक प्राथमिकता को रखता है, क्योंकि

  - यह पहले आया
  - मानवजाति के परम लक्ष्य को अभिव्यक्त करता है

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

महान् आज्ञा अधिक प्राथमिक है क्योंकि यह सांस्कृतिक आदेश को वर्तमान युग की विशेष परिस्थितियों पर लागू करती है।

महान् आज्ञा के कथन हमारे समय के लिए सांस्कृतिक आदेश की निर्देशात्मक व्याख्याएं एवं उसके प्रयोग हैं।

V. उपसंहार (1:23:47)

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पुनर्समीक्षा के प्रश्न

1. स्पष्ट कीजिए कि किस प्रकार यीशु ने पहाड़ी सन्देश के तीन भिन्न-भिन्न भागों में परमेश्वर के राज्य के महत्व पर बल दिया।

2. परमेश्वर के राज्य के तीन प्रमुख घटक कौन-कौनसे हैं? उनके बीच क्या संबंध हैं?

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. इसके तीन मुख्य समयों के द्वारा परमेश्वर के राज्य के ऐतिहासिक विकास को दर्शाइए।

4. हमें परमेश्वर की महिमा क्यों और कैसे करनी है?

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

5. हमें परमेश्वर का आनंद क्यों और कैसे लेना है?

6. परमेश्वर की महिमा और हमारे द्वारा उसका आनंद लेने में क्या संबंध है? यह कैसे कहा जा सकता है कि उनका लक्ष्य एक ही है?

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

7. सांस्कृतिक आदेश क्या है? इसके आधुनिक प्रयोग की तुलना इसके मूल प्रयोग से कैसे की जाती है?

8. महान आज्ञा क्या है? हमें इसे वर्तमान जीवन में कैसे लागू करना है?

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

9. सांस्कृतिक आदेश और महान आज्ञा में क्या संबंध है? तब हमें क्या करना चाहिए जब दोनों में तनाव या विपरीतता दिखाई देती है?

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

उपयोग के प्रश्न

1. नैतिक निर्णय लेते समय परमेश्वर के राज्य पर ध्यान देना कैसे हमारी सहायता करता है?

2. नैतिक निर्णय लेते समय परमेश्वर के राज्य पर ध्यान देने के व्यावहारिक उदाहरण का वर्णन कीजिए।

3. हम इस बात से मसीही नैतिक शिक्षा के लिए क्या अर्थ सोच सकते हैं कि मनुष्य परमेश्वर के स्वरूप हैं?

4. उन तीन बदलावों को बताइए जो आप अपने जीवन में परमेश्वर के नाम और प्रतिष्ठा को बढाने में कर सकते हैं, और स्पष्ट कीजिए कि उनका ऐसा प्रभाव क्यों पड़ेगा।

5. किन रूपों में आपका जीवन आनंद और शांति से भरा है? किन रूपों में आप इन लक्ष्यों से पीछे रह जाते हैं?

6. क्या आप परमेश्वर की व्यवस्था को आनंद और प्रसन्नता, या एक बोझ या मसीही जीवन के लिए अप्रसांगिक समझते हैं या कुछ और? क्यों? किस प्रकार आपके दृष्टिकोण को और अधिक बाइबल आधारित बनने के लिए बदलने की जरुरत है?

7. किस प्रकार विवाह सांस्कृतिक आदेश और महान आज्ञा को पूरा करने में सहायता कर सकता है? किस प्रकार अविवाहित रहना एक व्यक्ति को इन्हीं आज्ञाओं को पूरा करने में सहायता कर सकता है?

8. समाज किस प्रकार दिखाई देगा यदि सांस्कृतिक आदेश को सफलतापूर्वक और निरंतर रूप से पूरे संसार में लागू किया जाए?

9. महान आज्ञा को पूरा करने के लिए आप अपने जीवन में क्या कर रहे हैं? इस लक्ष्य को पूरा करने में और अधिक प्रभावशाली बनने के लिए आप और कौनसे कदम उठा सकते हैं?

10. इस अध्ययन से आपने कौनसी सबसे महत्वपूर्ण बात सीखी है? क्यों?

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org